❑पद

भक्ति रा पद

भक्त कवयित्री समान बाई

कवयित्री परिचै

साहित्य-समाज में 'मत्स्य री मीरां' रै नांव सूं आपरी ओळखाण राखण वाळी भक्त कवयित्री समान बाई रौ जलम वि. सं. 1882 में होयौ। समान बाई राजस्थानी रा चावा कवि अर विद्वान रामनाथ कविया री लाडेसर धीव हा। रामनाथ कविया रौ खास ठिकाणौ सीकर जिलै रौ नरसिंघपुरा गांव हो। आपरा परिवार नैं सीकर नरेस बळवंतसिंघ सूं तिजारा में 'सियाळी' गांव री जागीर मिळ्योड़ी ही। सियाळी में इज समान बाई रौ जलम होयौ। बळवंतसिंघ रै पछै विजयसिंघ गादी माथै बैठा। वै सियाळी गांव री जागीर जबत करली अर बदळा में सटावट गांव दियौ, जठै आज ई समान बाई रै पीहर वाळां रा वंसज बसै। बाळपणै सूं ई समान बाई नैं आपरा परिवार में लाड, अपणायत अर विस्वास मिळ्यौ जिणसूं उणां में आतमविस्वास रौ बळ हरमेस बण्यौ रैयौ। बाळपणै में मिळ्योड़ा हेत, अपणायत सूं सरोबार वांरौ पूरौ जीवण सहज अर सरल रूप सूं चालतौ रैयौ। 13 बरस री छोटी उमर में ई आपरौ ब्यांव अलवर जिलै रा माहुंद गांव में ठा. रामदयालजी साथै होयौ। ठा. रामदयालजी चावा कवि उम्मेदारामजी रा पड़पोता हा। अठै कैवण रौ अरथ औ ईज है कै समान बाई नैं काव्य सिरजण रौ गुण आपरै पिता सूं बीजरूप में मिळ्यौ, वौ पतिकुळ में अंकुरित होयनै हरियै धान रै रूप में ऊग्यौ। बगत रै साथै धान पाक्यौ, जिणरौ लाटौ लाटीज्यौ उणां री अमोलक रचनावां रै पाण अर साहित्य समाज रा पाठक उणरौ रस लेवै।

ब्यांव रै पछै ई समान बाई आपरा पति साम्हीं भरोसै रै साथै आ बात राखी कै वै इण नासवान देही नैं भगवत-भजन, साधना अर उपासना में लगावणी चावै। पति रामदयालजी वांरी मरजी रौ सम्मान करता थकां हामळ भरी। धरम रुखाळण वाळी, प्रभु-भजन में लीन रैवण वाळी जोड़ायत समान बाई सूं वै आपरौ भाग सरायौ। समान बाई रै कोई संतान कोनी ही। कुळ या वंस चलावण वास्तै आप आपरै परिवार सूं ई गंगासिंघ नै खोळै लियौ। समान बाई रौ आखौ जीवण तीरथ, वरत अर दान-पुन्न में बीत्यौ। अेक किंवदंती है कै समान बाई वृन्दावन गया उठै श्रीरंगजी रा मिंदर में कृष्ण रा सैंनरूप दरसण आपनैं होया। उणरै पछै आंख्यां में कृष्ण री उणीज मूरत नैं बसायनै वै आंख्यां रै पाटौ बांध लियौ। फेर वां निजरां सूं संसार नीं देख्यौ। वि. सं. 1942 री सावणी अमावस रै दिन आपरी देह परम गति पूगी जठै तांई आप वौ कौल निभायौ।

समान बाई री रचनावां राजस्थानी साहित्य जगत में निकेवळी पिछाण बणावै। आप मुक्तक काव्य रै रूप में केई गीत लिख्या, जिणमें ईस महिमा, श्रीकृष्णोपमा, उपमा श्रीराधिका, विनय रा पद अर कृष्ण लीला रा स्फुट पदां री बानगी सरावण जोग है। वै बन्ना-बन्नी नैं राम अर सीता रा प्रतीक मान नै ब्यांव रा गीत लिख्या जिकां नै 'सौळा' कैवै। अै गीत घणा चावा है। ब्यांव रै मंगळ मौकै अै गीत घणै चाव सूं गाईजै। वै 'पति सतक' री रचना कर पति नैं परमेसर जित्तौ आघमान दियौ अर पत्नी धरम सूं उरिण होवण रौ जतन कर्‌यौ।

समान बाई राम अर कृष्ण दोनूं रा पद लिख्या। श्रीकृष्ण आपरा इस्टदेव है। इण वास्तै कृष्ण री लीलावां में वांरौ मन घणौ रम्यौ। आपरै पदां में अंतस-अरदास है। माधुरी भाव, दास्य, सखा अर सरणागति रौ भाव वांरै पदां री विसेसता है। कवयित्री रौ मूळ भाव भक्ति रौ रैयौ है। काव्य-सिरजण री खिमता वांनै जलमघूंटी साथै मिळी।

सवैया, पद्धरी, कवित्त जैड़ा छंदां में वांरी रचनावां री बानगी देखीजै जिकौ उणां रै सास्त्रीय-ग्यान नैं उजागर करै। कवयित्री रै जीवण में किणी वस्तु रौ अभाव कोनी हौ। पीहर अर सासरै में आपनैं पूरी सुख-सुविधावां मिली। अेक उक्ति याद आयगी कै 'जे सुख में सिमरण करै तो दुख काहे को होय', सुख सूं गृहस्थ में रैवता थकां भक्ति अर वैराग रौ भाव अर साधना अवस ई आपरै पूरबलै भव रा संस्कारां रौ फळ हो।

समान बाई सारू 'मत्स्य री मीरां' रौ जिकौ भाव बण्यौ उणनैं लेयनै ई कीं बात करणी चावूंला। मीरां बाई री पिछाण मुलकां चावी है। पण समान बाई नैं मीरां रै जीवण साथै जोड़ां तौ केई बातां में समानता दीखै। दोनूं कृष्ण भक्त कवयित्रियां ही। सामंती समाज सूं दोनां रौ जुड़ाव रैयौ। घर में रैवता थकां दोनां नैं भणण-पढण रौ अवसर मिळ्यौ। आपरै इस्टदेव सूं अलौकिक प्रेम अर भक्ति रा रंग में रंगीजनै दोनूं ई गृहस्थ जीवण रौ त्याग कर्‌यौ। दोनूं कवयित्रियां रा पद गेयता रा गुणां रै कारण आज ई केई राग-रागिनियां में चाव सूं गाईजै। जीवण रौ बगत अर थितियां भलांई कांई रैयी होवौ, पण दोनूं में जलम सूं ई भक्ति रा संस्कार हा। समान बाई रै जीवण अर काव्य रचनावां नैं लेयनै केई आलेख छप्योड़ा है, पण आपरै काव्य सिरजण री सगळी सामग्री री अंवेर करनै उणनै पोथी-रूप देवण रौ अंजस जोग काम डॉ. मंजुला बारठ कर्‌यौ। 'भक्तिमति समान बाई : जीवन अर काव्य' पोथी सूं कीं टाळवां पद इण पाठ में लिरीज्या है।

पाठ परिचै

कवयित्री समान बाई रा पदां में विसय-विविधता निजर आवै। आपरा इस्टदेव रौ जलम, जलम री टैम होवण वाळा उच्छब अर मात-पिता रौ राजीपौ, उणां रा लाड-कोड, सार-संभाळ रौ रूपाळौ चित्रण आप कर्‌यौ। माता जसोदा रौ लाड-लडावण रौ, आपरै लाल नैं सुख देवण रौ, पाळण-पोसण रौ निराळौ रूप समान बाई रै पदां में मिळै। कृष्ण नैं पोढावण रा जाझा जतन माता जसोदा करै। पिलंग, बिछावणा, ऊपर ओढण री साल सब इधकाई लियोड़ा है। नींद में वांरै पैस्योड़ौ मुगट अर झुगलिया सूं अबखाई नीं होवै, इण वास्तै वांनै खोलनै अळगा मेलै तौ घुळमी आंख्यां में काजळ स्यात सुख देवण वाळौ व्है। सूत्योड़ा टाबर माथै मायड़ नैं घणौ सनेव-हेत आया करै, इण वास्तै आपरी निजर सूं बचावण खातर ई काजळ सारणौ नीं भूलै। सूत्योड़ा लाल माथै ई सनेव बिरखा करती माता जसोदा थेपड़ नै लोरी गावै (हालरिया हुलरावै)। शुकदेव मुनि, शारदा अर शिवजी माता जसोदा रै भाग री बडाई करै। जिण छवि रा दरसण वास्तै देवता ई तरसै, समान बाई खुद आपरा भाग सरावै। अंतस री निजरां सूं आप भगवान रै बाळरूप रा दरसणां रौ लाभ लियौ। 'पोढावणौ' सबद आदर सूचक है। पण कोई मां टाबर वास्तै इण सबद रौ प्रयोग नीं करै। कवयित्री रा इस्टदेव कृष्ण अठै माता री गोद सूं पलंग माथै सोवै तौ समान बाई 'पोढण' सबद काम में लेवै। 'पिलंग' सबद ई म्हारी जाण में 'पालणो' री तुलना में व्यापकता रौ सूचक है। औ इज कारण कै आप पोढण वास्तै 'पालणा' री नीं 'पिलंग' री बात करै। बाळरूप वरणाव में तौ 'पालणो' ई आवणौ चाईजै पण श्रीरंगजी री मूरत सूं निजरांमेळौ करण वाळी कवयित्री वांरै विराट रूप, व्यापकता, बडा होवण रै कारण पिलंग माथै पोढावण रौ वरणन करै।

भगत अर भगवान रौ मिळाप अलौकिक है। प्रियतम रूप में भगवान श्रीकृष्ण रौ पधारणौ अर रात ढळियां पछै पोढणौ। वै काची नींद सूं जाग नीं जावै, क्यूंकै परभात होवतां ई च्यारूंमेर पंछियां रौ चैंचाट, बिलोवणा रा झरड़ाटा, गवाळियां रा हाका, गायां अर बाछड़ां रौ रम्भावणौ अर गुजरणियां रै पगां री झांझर रा झीणा-झीणा सुर सुणीजणा सरू व्है जावै। कवयित्री रा प्रियतम मोहन चिमक नै उठ नीं जावै, वांरी नींद ओझक नीं जावै, इण सारू कित्ता-कित्ता जतन कवयित्री करै कै जाणै परभात रा सगळा कारज ई ढब जावै, अगुणौ बारणौ जड़ देवै नै पड़दौ ताण देवै, जिणसूं सूरज रै तेज रौ पळकौ ई नीं पड़ै। आथूणौ बारणौ खोलावै जिणसूं हवा आवती रैवै। सेवकां नैं कैवै कै ऊपर अटारी माथै जायनै पंछियां नैं उडावता रैवौ। सब पौरैदारां नैं सावचेत करदौ कै कोई बारै सूं मांयनै नीं आवै। परभात री नींद गैरी अर मीठी होया करै, उणरौ सुख श्रीकृष्ण नैं मिळै, इण वास्तै अर परभात री बेळा सांत भाव सूं पोढ्योड़ा

भगवान रा दरसण आपनैं होवता रैवै, इण कारणै समान बाई परभात रा उण बगत नैं जाणै बांधणौ चावै। नींद री अचेतन अवस्था में अेक चेतन झांकी रा दरसण पद री विसेसता है।

सगळी गोपियां माथै आपरै निरमळ अर निस्छळ प्रेम री बिरखा करण वाळा कृष्ण नैं चन्द्रावळी नांव री अेक सखी, जिणरौ कृष्ण रै वास्तै प्रेम इधकौ ई हौ, वा सखी ओळबा देवती कैवै कै म्हैं इतरी भोळी कोनी सांवरिया। कृष्ण! थूं दूजां सूं हंस-हसं नै बोलै अर म्हारै कनै आवतां ई दांतां आंगळी लाग जावै। किणी रै थूं अगड़ (गळै रौ गैणौ) घड़ावै अर म्हारै सूं बोलता नैं ई जोर आवै। उणां सारू लायोड़ी सगळी भेंट पाछी साम्हीं मेलती कैवै कै ल्यौ, जावौ किणी दूजी सखी री ई झोळियां भरौ। जावौ थांनै कित्ती बार (16 बार) कैय दियौ कै अबै मांयनै मत आवौ। आ सगळी लड़ाई हाव-भाव सूं निजरां आवै। श्रीकृष्ण, चंद्रावळी रै ओळमां रै सभाव पड़्योड़ा है। चंद्रावळी ई क्यूं, राधा, रुकमण, सत्यभामा अर ब्रज री गोपियां जिकी उणां रै दरसण नैं तरसती। निजरां सूं कृष्ण ओझळ नीं व्है जावै, इण वास्तै वांनै मनावती अर पाछी रूस जावती। कृष्ण री अेक मुळक माथै ई पाछी राजी व्है जावती। अठै औ ओळमो फगत चंद्रावळी रौ कृष्ण रै वास्तै अछेह प्रेम रौ प्रतीक है। 'अगड़' अठै 'हियै रौ हार' मतलब घणौ वाल्हौ हो सकै।

श्याम रै आयां बिना गोपियां नैं आवड़ै ई तो कोनी। वा इज चंद्रावळी जिकी 16 बार बरजनै घर में नीं आवण देवै, वा ईज पाछी मनवारां करनै बुलावै। पिलंग माथै बैठायनै पान री मीठी मनवार करै अर जिण बैरण जीभ सूं वा कृष्ण नैं ताना दिया उणनैं बाळण री, माथै लूण भुरकावण री बात करै। कृष्ण जिकौ सगळां रौ प्राणाधार है, सगळां रौ वाल्हौ है, उणरै प्रेम माथै तौ सगळां रौ बरोबरी रौ हक है, पछै मिळण नै घरै आवतां ई वा जिकी राड़ करी, उणरौ पिछतावौ करै। वौ राड़ रौ बगत अैळौ ई गियौ कै कृष्ण सूं मीठी बंतळ नीं व्ही। पण अबै चंद्रावळी आपरी बातां सूं कृष्ण नैं राजी कर लिया। रीस, आमनौ अर मनावणौ, राजीपौ, अै प्रेम रा न्यारा-न्यारा रूप है। कृष्ण री अछेही प्रीत रा सजीव चित्राम मांड नै कवयित्री समान बाई आपरौ जीवण संवारै। चंद्रावळी में कवयित्री रौ खुद रौ आतमभाव ई निजर आवै।

गोपियां रै साथै कवयित्री री ई आ मनसा है कै कृष्ण रा दरसण अर वांरौ साथ हरमेस मिळै। आपरै इस्टदेव री बाट जोवती कित्ती आकळ-बाकळ है वांरी दसा। जीव तड़पै, मन डरै, लोकलाज आडी आवै। प्रकृति उणां री उडीक नैं अर तिरस नैं बधावै। चौमासै री रुत में विजोग री पीड़ सवाई होयनै तड़पावै। औ बगत कीकर बीतैला? घणा दिन ई कोनी, 'परसूं' रौ उल्लेख पद में व्हियौ है। दो दिन रौ बिछोह ई भक्त रै वास्तै, प्रेमीजण वास्तै इत्तौ दोरौ व्है, जिणरौ सांतरौ अर मरम परसी वरणन कवयित्री करै। उड'र जावणी चावै, पण उडण वास्तै पांख्यां चाईजै। रितु वरणन— मेह रौ बूठणौ, काळी कांठळ मेह चढणौ, मोर, पपैयां, डेडरियां अर बरसाती जीवां रौ बोलणौ, बाग-बगीचा में फूलां रौ सरस होवणौ, अै सिणगार वरणन रा उद्दीपन रूप है। विजोग में अै सगळी थितियां दुख देवण वाळी अर चिड़ावण वाळी लागै। फूल रही बैरण सरसूं' अर 'खड़ी तरसूं' में नारीगत ईसका रा भाव ई दीखै। पण अै सब लोक-व्यवहार री बातां है; काव्य री बानगी है। समान बाई आपरै स्याम नैं पुकार करै कै आपरा दरसण बिना तरसूं हूं। दरसणां री व्रिस्णा अर चावना है।

दास्य भाव रौ औ पद, जिणमें भक्त कवयित्री री अरदास रौ ढंग कितरौ इधकौ है। खुद नैं औगुणां री जाज बतावै अर औगुणां नैं गुण में बदळण री अरदास करै। 'जाज' बतावण लारै भाव औ है कै भगवान तौ भवसागर पार करावण वाळा है, इण पुकार सूं दासी री औगुण रूपी नाव नै ई पार लगाय लेवैला। दूजौ पद सरणागति रै भाव रौ है कै आप नाथां रा नाथ हौ, म्हनैं भूलजौ मत अर भोळावण कांई देवै कै राधा, रुकमण, सत्यभामा, कुबजा ज्यूं म्हनैं ई राखजौ। कित्तौ गैरौ भाव है इणमें। राधा अर कृष्ण तौ अभेद है। दोनूं अेक ई है। रुकमण, सत्यभामा कृष्ण री पटराणियां है अर कुबजा दासी है। पैली प्रेमभक्ति अर पछै अधिकार अर उणरै पछै लारै जावतां 'कुबजां ज्यूं संग लीजो जी'। हर रूप अर दसा में समान बाई कृष्ण रै चरणां में सरणौ चावै। 'निरंजन' रूप में निरगुण भाव बण जावै।

सातवौं पद पुकार रौ है, जिणमें भगवान रा बिरद याद दिरावतां कवयित्री सरणौ चावै। हे जगत रा ईस! ज्यूं पूतना नैं माता जसोदा री गति दी, गज रौ उद्धार करयौ, गरुड़ नैं छोड'र आप पाळा ई दौड़नै उणरी रिछ्या करी, भक्त प्रह्लाद री रिछ्या वास्तै नरसिंघ रूप धरयौ अर आप खम्भा मांयनै प्रगट होया। ध्रुव नैं तारियौ, उणनैं अखंड राज दियौ। कवयित्री कैवै कै म्हारै में इत्ती सामरथ कोनी अर मति ई कोनी कै आपरा गुण गाय सकूं, पण आपरौ विरद है कै सरणै आयोड़ां नैं सरणौ देवौ। हे सांवरिया! म्हैं ई आपरी सरण में आई हूं।

आठवां पद में कवयित्री रौ भाव जीवण-दरसण सूं जुड़्योड़ौ है। संकट भलांई काया रौ होवौ या भौतिक सुखां रौ अभाव। दुख में भगवान नैं ई याद करीजै। आध्यात्मिकता रै साथै कवयित्री भगवान सूं केई सवालां रा पड़ूत्तर मांगै। समान बाई कैवै कै जीव तौ अविनासी ब्रह्म ई है। जीव ब्रह्म है तौ पाप-पुन्न, जलम-मरण, आगोतर अर पूरबला भव रा जंजाळ उणरै साथै क्यूं जोड़्या? तुळसीदासजी मानस में केई मानस रोगां रौ वरणाव करै, उणमें दूजां रै सुख सूं दुखी होवणौ ई अेक मानस-रोग है। हत्या करणी, संत नैं सतावणौ, परायौ धन खोसणौ, अै सब पाप-करम बताईज्या है। अै पाप पूरबला जलम में करयोड़ा होवै तौई आगोतर में भुगतणा पड़ै। किण देह रा दंड किणनैं भुगतणा पड़ै? औ कांई आपरौ न्याव? आप तौ भक्ता नैं दुख नीं देवौ, वांनै नीं सतावौ, पण औ म्हैं नीं कैवूं, सगळौ जगत कैवै। म्हैं तौ कदैई आपरा गुण नीं गाया होवूंला, इण वास्तै आप भुगतावौ या दुख देवोला तौ म्हैं सहन करूंला, म्हैं तौ तांबौ हूं, सोनौ कोनी जिकौ तपावण सूं सवायौ चमकै। उपालंभ, ओळबौ है, जिणमें व्यंग्य है। आप है तौ सोळवौ सोनौ, इण कारण डोढा बोलां सूं भगवान नैं सावचेत करै। कवयित्री हरि नैं सावचेत करतां कैवै कै अैड़ी भूल फेर मत करजौ, इणमें तौ आप ई ठगीजोला! आपरी भक्ति रौ दान मिळै वा पात्रता म्हारै में कोनी, पण म्हैं वौ पात्र बणण री पूरी खेचळ करूंला। समभाव सूं दुख नै ई सुख मान नै भोगूंला, अैड़ी भावना भगत री बणै तौ भगवान नैं आपरा नियम बदळणा पड़ै। ईस भगती में विध-विध भाव अर विसय आपरै काव्य री विसेसता है। अेक-अेक पद अर गीत न्यारी खिमता लियोड़ा निजर आवै।

भक्ति रा पद

(1)

जसोदा राणी लाला कूं पौढावै।। टेक।।
रतन जड़ित को पलंग ढळावै, ऊपर वस्त्र बिछावै।
जरी बाफता को धरै गींदवो, कुसुम सुगंध लगावै।
ताज झुगलिया खोल धरे है, अंजन दृगन लगावै।
ले गोदी पौढाय स्याम को, ऊपर साल उढावै।
पलंग पास बैठी बड़ भागण, हालरिया हुलरावै।
सो छवि सुक सारद सिव निरखै, 'समनी' भाग सरावै।

(2)

जा दासी ग्वाला नै कीज्यो, बाछ्या गाय मिलावै री।। टेक।।
बांद्योड़ो बाछ्यो बोलैगो, मोहन ओझक जागै री।
अब तो रैन रही बस थोड़ी, टुक-इक लोयण लागै री।

धीरै बोलो, धीरै चालो, जनि झांझर झाणकाओ री।
अब जनि दही बिलोवो कोई, न परभाती गावो री।
पूरब द्वार पै परदा करदो, लेवो खोल पछियारै री।
चहुं ओरन पंछी न बोले, कोई बैठो जाय अटारी री।
पहरायत चौकस सब करद्यो, भरि नींद पिया सब सोवै री।
'समनी' कूं स्याम प्रभात समै, हरि को दरसण फिर होवै री।

(3)

सांवरिया म्हे कांई ऐसा भोळा जी।। टेक।।
हंसि हंसि प्रीति करत औरन सूं, म्हासूं बोलत मोळा जी।
बींनै तो थे अगड़ घड़ावो, म्हां सूं मीठा न बोला जी।
हमां धरिगा सो लेय पधारो, वींका ही भरज्यो झोळा जी।
बार रहो भीतर जनि आवो, बरज दिया बर सोळा जी।
प्रेम की राड़ निजर में ही जाणै, नाहिं बहैं छै गोळा जी।
'समनी' के स्याम हंसे सुनि के, चन्द्रावलि के रोळा जी।

(4)

घर आवो जी स्याम भलांई सूं।। टेक।।
बैठो पलंग पान मुख लीजै, राजी करूं अब कांई सूं।
जाळू जीभ लूंण भरूं यामें, राड़ि करी आतांई सूं।
तुम सूं कौन और मोहि प्यारो, जीवन म्हांको थांई सूं।
'समनी' के स्याम रिझाय लियो है, चन्द्रावलि बातां ई सूं।

(5)

हरि कैहर गये परसूं परसूं, कब आवेगी बैरन परसूं।। टेक।।
मन चाहत है उड जाय मिलूं पर, उड्यो न जाय बिना पर सूं।
घन घोर घटा बिजळी चमके, मेह कहे बरसूं बरसूं।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल बोल मधुर सुर सूं।
फूल रहे बाग बगीचा ही फूल्यां, फूल रही बैरण सरसूं।
ऐसी न करूं, कुण लाज डरूं, आंगन बीच खड़ी तरसूं।
कहत 'समान' सुणो ब्रजनंदन, हरि दरसन बिन मैं तरसूं।

(6)

सांवरा थांका दासी नै कदे तो याद कीज्यो जी।। टेर।।
मैं औगुण की झाज सांवरा, (म्हारा) औगुण गुण कर लीज्यो जी।
मैं अनाथ तुम नाथ जगत के, भूल बिसर मत दीज्यो जी।
राधा, रुकमणि अरु सतभामा, कुबजा ज्यों संग लीज्यो जी।
कहत 'समान' सुणो जी निरंजन, (म्हारो)चित्त चरणां में लीज्यो जी।

(7)

हेलो म्हारो सुणज्यो जी जगदीश,
जगतपति जग रखवाळा रै मुरली वाळा रै।। टेक।।
प्रथम पूतना मारण कारण, कुच रै विष लपटायो रै।
उनको जसमत की गत दीनी, सुरग पठाई रै।
गज अर ग्राह लड़ै जळ भीतर, लड़त-लड़त गज हार्‌यो रै।
गज की बेर पयादेहि धाये, गरुड़ बिसार्‌यो रै।
खंभ फाड़ नरसिंग रूप धार्‌यो, हिरणाकुश रिपु मार्‌यो रै।
उनको सुत प्रहलाद उबार्‌यो, धूजी तार्‌यो रै।
मैं मति हीन कछु नहीं लायक, कौन भांति गुण गाऊं रै।
कहै 'समान' सुणो सांवरिया, शरण आऊं रै।

(8)

नाथ क्यों एतो कष्ट सहायो, वाको कारण मैं नहीं पायो।। टेक।।
जीव ब्रह्म सम वेद बतावत, पाप पुण्य क्यों ल्यायो।
जो ओ जीव ब्रह्म ही होतो, क्यों जंजाळ लगायो।
कंठ किसी को मैं नहीं काट्यो, ना कोई संत सतायो।
पर सुख देख दुःख नहीं मान्यो, पर धन खोस न खायो।
सो पूरबला पाप कह्या छै, तुम नहीं न्याय चलायो।
बीं देही तो कर्म किया छा, ईनैं क्यूं भुगतायो।
जगत कहै हरि भगत न तावै, मैं तोको कब गायो।
सोनो व्है तो भदै सवायो, तामो वृथा तपायो।
कहत 'समान' सह्यो हरि मैं तो, जो तुमने भुगतायो।
ऐसी भूल फेर मत कीज्यो, यह तो अकल ठगायो।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

पौढावै=सोवाणै। जड़ित=बण्योड़ौ। जरी बाफता=कलावत रौ काम, आरी–तारी रौ काम। अंजन=काजळ, सुरमौ। दृगन=आंख्यां। बड भागण=मोटा भाग वाळी। हालरिया=टाबर, लाल। हुलरावै=थपकी देवणौ, लोरी रै साथै। ओझक=चिमकनै उठणौ। टुक इक=अेक पल भरी। लोयण=लोचण, आंख्यां। रैण=रात। झांझर=पायल, घूंघरा वाळी। जनि=मत, बरजणै रै रूप में। पछियारै=लारै या आथूणौ। अटारी=मकान रै ऊपरलौ भाग। अगड़=गळै रौ भारी गैणौ। धरिंगा=धरणौ, मेलणौ। वींका=उण रा, वीं रा। बरज दिया=मना करयौ। बर सोळा=सोळा बार, केई बार। रोळा=हाका। गोळा=हाथापाई, बारूद। बहै छै=चालै। जाळूं=बाळूं, जळाऊं। लूण=नमक। राड़ि=झगड़ौ, लड़ाई। दादुर=मेढक, डेडरिया। पर=पांख। बैरण=दुस्मण, सत्रु। औगुण=अवगुण। बिसर मत=भूलौ मत। जसमत=जसोदा, यसोदा। गत=गति (मुगती, मोक्ष)। ग्राह=अजगर। बेर=बारी। पयादेहि धाये=पाळा दौड़िया, उभराणा भाज्या। बिसार्‌यौ=भूलग्या, छोडनै। धूजी तार्‌यौ=ध्रुव भक्त नैं तिरायौ। खोस=माडाणी लेवणौ, खोसणौ। जंजाळ=माया मोह। पूरबला=पूरब जलम रा, पैलड़ा। भुगतायौ=दुख देवणौ। तावै=सतावणौ, दुख देवणौ। तामौ=तांबौ, अेक धातु। वृथा=बिरथा, अैळौ, बिना काम। भदै सवायौ=घणौ होवै, चमक बधै। सह्यो=सहन करयौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. समान बाई रै पिता रौ नांव हो—

   (अ) जोरावर सिंह (ब) जसनाथ कविया

   (स) रामनाथ कविया (द) गंगासिंह

   ( )

2. समान बाई रौ जलम होयौ—

   (अ) नरसिंघपुरा में। (ब) सियाळी में।

   (स) सटावट में। (द) सीकर में।

   ( )

3. समान बाई रै जलम रौ बगत हो—

   (अ) वि. सं. 1995 (ब) वि. सं. 1857

   (स) वि. सं. 1460 (द) वि. सं. 1882

   ( )

4. ब्यांव री बगत समान बाई री उमर ही—

   (अ) 15 बरस (ब) 13 बरस

   (स) 18 बरस (द) इण मांय सूं अेक ई नीं।

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. समान बाई रै जीवण री तुलना किण भक्त कवयित्री सूं करी जावै ?
2. समान बाई रौ सुरगवास कद होयौ ? बरस अर तिथि लिखौ।
3. समान बाई आपरी आंख्यां माथै पाटी क्यूं बांधी ?
4. 'मत्स्य री मीरां' बाजण वाळी भक्त कवयित्री रौ नांव कांई हौ ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. समान बाई री रचनावां रौ मूळ विसय कांई हौ ?
2. समान बाई री रचनावां रौ कोई अेक पद लिखौ।
3. भक्त कवयित्री समान बाई रौ जीवण किण कामां में बीत्यौ ?
4. ''सोनौ व्है तो भदै सवायो, तामो वृथा तपायो।'' इण ओळी रौ भाव लिखौ।
5. ''पर-धन खोस न खायो।'' कवयित्री किणनैं अर क्यूं कैवै ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. भक्त कवयित्री समान बाई रौ जीवण-परिचै लिखौ।
2. समान बाई री रचनावां रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।
3. ''समान बाई नैं 'मत्स्य री मीरां' रै नांव सूं जिकी पिछाण मिळी, उणरौ कारण भक्ति-काव्य सिरजण रैयौ।'' इण कथन माथै आपरा विचार लिखौ।
4. भक्त कवयित्री समान बाई री भक्ति किण भांत री ही। भक्ति-भावना नैं प्रगट करण वाळा पदां रौ भाव लिखौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. जसोदा राणी लाला कूं पौढावै।। टेक।।
   रतन जड़ित को पलंग ढळावै, ऊपर वस्त्र बिछावै।
   जरी बाफता को धरै गींदवो, कुसुम सुगंध लगावै।

2. धीरै बोलो, धीरै चालो, जनि झांझर झाणकाओ री।
   अब जनि दही बिलोवो कोई, न परभाती गावो री।
   पूरब द्वार पै परदा करदो, लेवो खोल पछियारै री।
   चहुं ओरन पंछी न बोले, कोई बैठो जाय अटारी री।

3. सांवरिया म्हे कांई ऐसा भोळा जी।। टेक।।
   हंसि हंसि प्रीति करत औरन सूं, म्हासूं बोलत मोळा जी।
   बींनै तो थे अगड़ घड़ावो, म्हां सूं मीठा न बोला जी।
   हमां धरिगा सो लेय पधारो, वींका ही भरज्यो झोळा जी।

4. गज अर ग्राह लड़ै जळ भीतर, लड़त-लड़त गज हार्‌यो रै।
   गज की बेर पयादेहि धाये, गरुड़ बिसार्‌यो रै।
   खंभ फाड़ नरसिंग रूप धार्‌यो, हिरणाकुश रिपु मार्‌यो रै।
   उनको सुत प्रहलाद उबार्‌यो, धूजी तार्‌यो रै।।